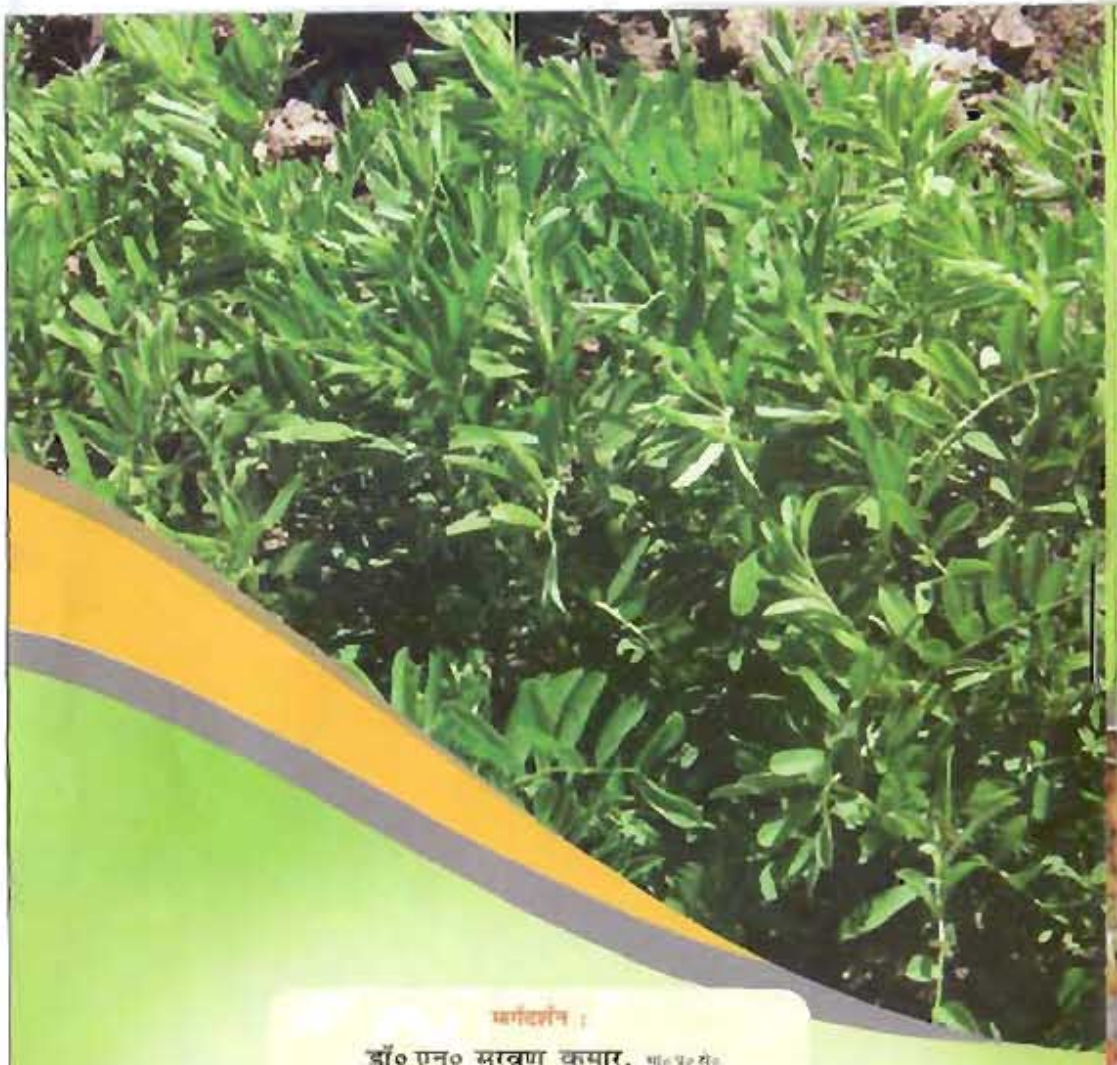

मार्गदर्शन :

डॉ० एन० सरवण कुमार, भा०प्र०से०
जिलाधिकारी-सह-अध्यक्ष, आत्मा, पटना

श्रीमती सीमा त्रिपाठी, प०प्र०से०
उप विकास आयुक्त-सह-उपाध्यक्ष, आत्मा, पटना

प्रकाशक :

श्री मनोज कुमार
परियोजना निदेशक, आत्मा, पटना

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें–
श्री वृजेन्द्र मणि, उप परियोजना निदेशक, आत्मा,
विकास भवन, समाहरणालय परिसर, पटना
दूरभाष : 0612-2219166, 9471002668

Vidya Printers, Shivpuri, Patna-23

बिहार सरकार

कृषि विभाग

मसूर की खेती

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण (आत्मा)
समाहरणालय, पटना

मसूर की उन्नत खेती

मसूर, की खेती रबी मौसम में प्रायः सभी जिलों में की जाती है। यह बिहार की बहुप्रचलित एवं लोकप्रिय दलहनी फसल है तथा इसका कुल क्षेत्रफल 1.71 लाख हे0 और औसत उत्पादकता 880 किग्रा प्रति हे0 है। भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने में यह सहायक होती है। असिंचित क्षेत्रों के लिए अन्य रबी दलहनी फसलों की अपेक्षा मसूर अधिक उपयुक्त है।

खेत की तैयारी

दोमट मिट्टी मसूर के लिए सर्वोतम पायी जाती है। मिट्टी भुरभुरा होना आवश्यक है। इसलिए 2–3 बार देशी हल अथवा कल्टीवेटर से जुताई कर ऐसी अवस्था प्राप्त की जा सकती है।

अनुशासित उन्नत प्रभेद

क्र0 सं0	प्रभेद	बुआई का उपयुक्त समय	विशेषता
1	2	3	4
1	पंत 406	25 अक्टू0–25 नवम्बर	जड़ सड़न एवं उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी, पैरा फसल के लिये उपयोगी, छोटा दाना
2	अरूण (पी0 एल0 77-12)	15 अक्टू0–15 नवम्बर	उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी बड़ा दाना
3	बी0 आर0 25	16 अक्टू0–15 नवम्बर	जड़ सड़न रोग के लिये प्रतिरोधी
4	पंत के0 639	17 अक्टू0–15 नवम्बर	जड़ सड़न एवं उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी, जोन 1 एवं 2 में इसकी खेती की जा सकती है।
5	मल्लिका (के0 75)	18 अक्टू0–15 नवम्बर	उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी, पूरे बिहार में इसकी खेती की जाती है।
6	एच0 यू0 एल0 57	19 अक्टू0–15 नवम्बर	जड़ सड़न/उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी, छोटा दाना
7	के0 एल0 एस0 218	20 अक्टू0–15 नवम्बर	दाना छोटे आकार का होता है।
8	डी.पी.एल. 62	25 अक्टू0–25 नवम्बर	उकठा रोग के लिये प्रतिरोधी किस्म

उर्वरता प्रबंधन

राइजोबियम कल्चर का प्रयोग : बीज में राइजोबियम कल्चर का प्रयोग करने से दलहनी फसलों की जड़ों में नेत्रजन स्थिरीकरण बढ़ जाता है जिससे भूमि की उर्वरता बढ़ जाती है तथा उपज में भी बढ़ोत्तरी होती है। राइजोबियम कल्चर का (200 ग्राम प्रति 5 पैकेट) प्रति हे0 के लिये आवश्यकता होती है। कल्चर का व्यवहार

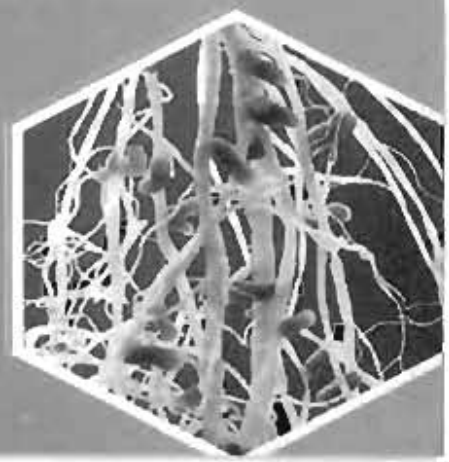

उसकी समाप्ति तिथि देखकर ही करें। 100 ग्राम गुड़ को 1 ली0 पानी में घोलकर हल्का गरम करें ताकि घोल लसलसा हो जाये। तदोपरान्त ठंडा होने पर इस घोल में पाँच पैकेट राइजोबियम कल्चर डाल कर अच्छी तरह से मिला दें । जीवाणुयुक्त घोल में 40 किलो बीज को अच्छी तरह से मिला दें ताकि एक परत बन जाये, इसके बाद छाये में सुखाकर शीघ्र बुआई कर दें।

फास्फोजिप्सम का प्रयोग :सघन खेती एवं गन्धक रहित उर्वरकों के अधिक उपयोग से मिट्टी में गन्धक की कमी हो रही है । फास्फोजिप्सम में 17 प्रतिशत गन्धक होता है जिसे मसूर की बुआई पूर्व 200 किलो प्रति हे0 व्यवहार करने से 30–35 किलो गंधक की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

सूक्ष्म पोषक तत्व का प्रयोग : बिहार में मुख्यतः जिंक और बोरान की कमी पायी जा रही है जिससे दलहन की उपज प्रभावित होती है। सूक्ष्म तत्वों का उपयोग मिट्टी जाँच के आधार पर किया जाना चाहिये, जिंक एवं बोरोन के व्यवहार उर्वरक के रुप में बुवाई के पूर्व अनुशंसित मात्रा में 30–40 किलो कम्पोस्ट के साथ खेत में करना चाहिये । सूक्ष्म पोषक तत्वों के एक बार प्रयोग करने से 5 फसल लगातार लिया जा सकता है।

पीएसबी का प्रयोग : यह फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ाने के लिये जीवाणु उर्वरक है बहुधा असिंचित भूमि में स्फुर की उपलब्धता घट जाती है। पीएसबी प्रयोग करने से फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ जाती है। 4 किलो पीएसबी को 50 किलोग्राम कम्पोस्ट में मिलाकर खेतों में बुवाई पूर्व व्यवहार करना चाहिये।

उर्वरकों का उपयोग : उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना उचित होता है। सामान्य उर्वरता वाले खेतों में बुआई के समय 20 कि0ग्रा0 नेत्रजन एवं 40 कि0ग्रा0 फास्फोरस प्रति हे0 प्रयोग करने से उत्पादन में वृद्धि लायी जा सकती है। इसके लिए 100 किलो DAP या 46 किलो यूरिया तथा 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट प्रति हे0 की दर से बुआई के समय में इस्तेमाल करें।

बीज दर :

एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में बुआई के लिए 40 कि0ग्रा0 बीज की आवश्यकता होती है। बड़े दाने वाली किस्म में 5 कि0ग्रा0 बीज प्रति हे0 की दर से बढ़ा दें।

पंक्ति में बुआई :

बोने की दूरी 25 सें0मी0 x 10 सें0मी0 रखें। कतार में बुआई करने से खरपतवार नियन्त्रण में आसानी होती है, तथा बीज की मात्रा कम लगती है एवं समरुप से पौधों का जमाव भी होता है।

बीजोपचार :

कीट –व्याधि से फसल को मुक्त रखने के लिये ट्राइकोडर्मा विरीडी 5 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बेन्डाजिम 1.5–2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम तथा 6 मि0ली क्लोरोपायरीफास बीज की दर से उपचारित करने से श्रेयशकर होगा। बीजोपचार में सबसे पहले फफूँदनाशी तत्पश्चात कीटनाशी एवं सबसे बाद में राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने का क्रम अनिवार्य है।

सिंचाई :

जाड़े में यदि वर्षा हो जाये तो सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कम नमी वाले खेतों में एक सिंचाई लाभप्रद पायी गयी है। कम नमी वाले खेतों में एक सिंचाई, बुआई से 45 दिनों बाद करें । सिंचाई हल्की होनी चाहिये क्योंकि पानी का जमाव होने पर फसल प्रभावित होती है। टाल क्षेत्रों में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। सूक्ष्म सिंचाई के लिये स्प्रिंकलर का प्रयोग करें जिससे सिंचाई जल दक्षता में वृद्धि होती है।

खरपतवार नियंत्रण

परजीवी खरपतवार खासकर अमरबेल (कस्कुटा / ऑडर) का प्रकोप पिछले कुछ वर्षों से दाल क्षेत्रों में भयंकर रुप से देखा जा रहा है । इसके अलावा मसूर में मोथा , दूब , कृष्णनील , आक्टा, बथुआ, मिसिया, मटरा मटरी, वनप्याजी, खागड़ा, बनगाजर आदि खरपतवार पाये जाते है। इनके नियंत्रण के लिये 2 ली0 फ्लूक्लोरिलीन को 600–700 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से अंतिम जुताई से बाद खेत तैयार कर छीट कर भूमि में मिला दें या पेन्डीमिथिलीन 30% EC 2 – 2.5 ली0 बोने के 2 दिन के अन्दर 600–700 ली0 पानी में खेत तैयारी के बाद बोने के पूर्व नैपसेक यन्त्र से छिड़काव कर रैक से मिट्टी की सतह में मिला दें। उपचार के 30–35 दिन के अन्दर कोई सस्य क्रिया नहीं करें।

फसल सुरक्षा

कीट व्याधि नियन्त्रण :

(क) रोग व्याधि नियन्त्रण :बिहार में मसूर के प्रमुख रोग व्याधि में उकठा एन्थ्रेकनोज, स्कोकाइटा ब्लाइट तथा ग्रेमोल्ड है। इसके बचाव के लिए खड़ी फसल में मेंकोजेब 75% WP 2 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करें ।

(ख) कीट नियन्त्रण : मसूर के प्रमुख कीड़ों में कजरा पिल्लू, कटवर्म, सूडी तथा एफिड प्रमुख है। कीट को आर्थिक क्षतिस्तर से नीचे रखने के लिये बुआई से 20–25 दिन बाद एजैडिरैक्टीन (नीम तेल) 0.03 प्रतिशत 3 मि0ली0 प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करना चाहिये।

उपज

फसल तैयार हो जाने पर सुबह में कटनी करें। कटाई के बाद खलिहान में 4–5 दिन सुखाकर दौनी कर लें। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह सुखा लें अन्यथा कीड़े लगने की अधिक संभावना रहती है। उन्नत विधि से खेती करने पर 18–20 क्विंटल उपज प्राप्त हो सकता है।